ऐन्टी रेट्रो वायरल चिकित्सा

लेखक : ब्रौन्नर गौन्काल्स

ऐन्टी रेट्रो वायरल चिकित्सा (ए आर टी) का विकास औषध के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों में से एक है। एच आइ वी या एड्स का प्रमुख इलाज ए आर टी है । येह समझना आवश्यक है कि इस्से रोगमुक्ति नही होती परन्तु इसने एच आइ वी बिमारी का अनुक्रम बदल दिया है ।

ऐन्टी रेट्रो वायरल तत्वों के अलग अलग सूत्र एच आइ वी की जीवन रेखा के अलग अलग अवस्थाओं के लिए विक्सित किए गए है । एच आइ वी विरोधी तत्वों के मुख्य समूह हैं : न्यूक्लोटाइड/न्यूक्लोसाइड रिव्रर्स टरान्स्क्रिपटेस इन्हिबिटर, प्रोटीएस इन्हिबिटर, एवं द्रवण (फयुज़न) या प्रवेश (एन्टरी) इन्हिबिटर, । न्यूक्लोसाइड समानान्तर तत्व अस्सी के दशक के अन्त में ए आर टी का सबसे पेह्ले विक्सित होने वाला वर्ग बना । लेकिन उत्तरजीविता तब बढ़ी जब नब्बे के दशक में चिकित्सकों ने संयोजन चिकित्सा प्रारंभ की । इसमें दो या अधिक दवाओं का उपयोग होता है । इस संयोजन (काकटएल) के ज़्यादा सफल होने का मुख्य कारण है कि एच आइ वी बहुत द्रुतगामी परिवत्र्य है और इस वजह से येह बहुत जल्दि गवा का प्रतिरोध करने लगता है। अब 20 से अधिक दवायें अनुज्ञप्ति युक्त हो गइ हैं । इनमें विशिष्ट और संयोजित ऐन्टी रेट्रो वायरल तत्वों के सूत्र शामिल हैं ।

ऐन्टी रेट्रो वायरल चिकित्सा का संकेत रोग विषयक मूल्यांकन, वायरल भार तथा सी डी 4+ (CD4+) गणना पर आधारित होता है । येह तीन कारक निर्धारित करते हैं कि चिकित्सा आरंभ करनी चाहिये या अभी भी विलम्बित करी जा सक्ती है। एड्स के खतरे को लम्बी विषाक्तता तथा वायरल प्रतिरोध से तोलना आवश्यक है। बहुत बार विभिन्न संस्कृति के लोगों के लिए येह समझना विशेष रूप से कठिन साबित होता है कि एच आइ वी विकृति वाले हर व्यक्ति को फौरन चिकित्सा कि आवश्यकता नही होती। दूसरी तरफ जिन लोगों को एड्स से डर लगता है वह ऐन्टी रेट्रो वायरल चिकित्सा से उतना ही डरते हैं । उनको लगता है कि उन्हे तब दवा शुरु करनी पडती है जब अन्त निकट होता है । येह बिलकुल सच नही है । अन्य मरीजों को लगता है कि जब ऐन्टी रेट्रो वायरल चिकित्सा आरंभ होगी तो वेह काम नही कर सकेंगे तथा उन्हे हस्पताल में निषेचन लेते हुए बहुत समय बिताना पडेगा । येह धारणा गलत है । ऐन्टी रेट्रो वायरल पदार्थ गोली जैसे लिए जाते हैं और मरीज पेह्ले जैसी ज़िन्दगी बिता सक्ते है ।

ऐन्टी रेट्रो वायरल दवा कब बदलनी पडती है? येह एक आम परिस्थिति 50 प्रतिशत मरीजों में देखी गइ है और इसके तीन मुख्य कारण हैं : कुशाग्र रोगलक्षण (जैसे दस्त, बहु तंत्रिका,ए, गंभीर अरक्तता, अगन्याशय रोग इत्यादि) वायरल चिकित्सा की असफलता एवं लम्बी अवधि कि विषाक्तता ।

हॉलाकि ए आर टी के परिचय ने एच आइ वी और एड्स के इलाज का रूप बदल दिया है और बहुत संदूषित लोगों को दीर्घ आयु किया है, फिर भी कीमत विकासशील देशों में इसके प्रयोग में बाधा है । यू एन एड्स के अनुसार 2006 में दुनिया के 395 लाख लोग एच आइ वी से संदूषित थे – इनमें ज़्यादातर लोग कम आमदनी वाले देशों में रेहते हैं । इनमें ए आर टी चिकित्सा का उप्योग लेने वाले लोगों का बहुत कम अनुपात है । प्रभावकारी एच आइ वी या एड्स कि देखभाल के लिये ए आर टी जरूरी है । अगर एच आइ वी या एड्स के साथ रेहने वालों को ए आर टी उप्लब्ध नही हुआ तो वेह ज्यादा लम्बा जीवन नही जी पायेंगे ।